इन्टरव्यू ३४
स्थान मदनपुरा

प्र: आपका नाम क्या है ?
ज: मेरा नाम शकील अनवर है।

प्र: आपकी उम्र कितनी है ?
ज: मेरी उम्र 30 बरस है।

प्र: आप हैण्डलूम में ही लगे हैं ?
ज: हां यही कमाते करते हैं यही।

प्र: आपका अपना करघा पर करते हैं ?
ज: नहीं मजदूरी पर किया जाता है दूसरे का लिया के किया जाता है।

प्र: आपका अपना करघा भी है ?
ज: नहीं।

प्र: आपका अपना करघा नहीं है ?
ज: नहीं।

प्र: तो आपके साड़ी के हिसाब से मिलती होगी मजदूरी ?
ज: हां जैसे वह बीन रहा है वह लड़का वही
(कैसेट नम्बर 4 खत्म)

(कैसेट नम्बर 5)
प्र: एक साड़ी की मजदूरी कितनी होती है ?
ज: वही सात सौ रुपया।

प्र: एक महीने में कितनी साड़ी बिन लेते हैं ?
ज: ये तो मेहनत पर है और लाइट है तो काम किया जायेगा तो मजे से पन्द्रह सौ- सोलह सौ रुपया।
रूकावट
बुनाई को कोई गारन्टी नहीं हैं। महीना भर की लग जाता है। आदमी का तबियत खराब हो जाए तो महीना भर भी लगा जाता है। कभी-कभी छः महीना लग जाता है। और ज्यादे मेहनत करे तो छः दिन में भी पुजा जाता है। मेहनत पर है।
शुरू
कोई ड्यूटी नहीं हैं, जब समय मिल तब किए अब बिजली नहीं रहेगी तो कैसे करेंगे।

प्र: आपका अपना करघा हो तो आप छः महीना में भी बुन सकते हैं लेकिन जब आप मजदूरी पर कर रहे है तो ऐसा नही हो सकता ना ?
ज: उसमें भी यही करना है। लाइट नहीं है तो घूमेंगे क्या करेंगे। करजा पवाई लेंगे तो खायेंगे पेट तो पालेंगे।

प्र: तो जो आपको मजूरी पर रखे हैं तो उनके तरफ से बंधा नही हैं कि इतने दिन में पूरा करके दो ?
ज: अरे कैसे कहेंगे जब वो भी देख रहे हैं कि लाइट नहीं हैं, अंधेरे में कैसे करेंगे ।